टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

एम. ए. हिंदी, (भाग–१)

मई २०१० परीक्षा

विषय :प्राचीन काव्य (H-102)

दिनांक : १९/५/२०१० **कुलअंक : १००** **समय : प्रात: १०.०० से १.००**

सूचनाएँ : १. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

२. सभी प्रश्नों के लिए समान अंक हैं ।

प्रश्न १. अ) 'पद्मावत' के आधार पर जायसी के प्रेमभाव का सम्यक् निरुपण कीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) कबीर के दार्शनिक विचारों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

प्रश्न २. अ) '' भक्तीरस का पूर्ण परिपाक 'विनयपत्रिका' में देखा जाता है।'' सप्रमाण स्पष्ट कीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) 'गीतिकाव्य' की दृष्टि से मीराँ की पदावली का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न ३. अ) बिहारी के भक्ति और नीति विषयक दोहों का परिचय दीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) घनानंद के विरह–वर्णन की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न ४. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए। **(२०)**

१) जायसी का नखशिख वर्णन ।
२) कबीर की 'सतगुर महिमा'।
३) विनयपत्रिका का प्रयोजन ।
४) घनानंद की भाषा ।

प्रश्न ५. निम्नलिखित संदर्भों में से किन्हीं दो संदर्भों की व्याख्या कीजिए। **(२०)**

१) रकत क आँसु परे भुइँ टूटी। रेंगि चली जनु बीर बहूटी।
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला। हरियर भुइँ कुसुंभि तन चोला।
हिय हिंडोल जस डोलै मोरा। विरह झुलावै देइ झँकोरा।
बाट असूझ अथाह गँभीरा। जिउ बाउर भा भवे भँभीरा।

२) हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया। रामबडे मैं तनक लहुरिया।
किएउं सिंगारु मिलन के तांई। हरि न मिले जग जीवन गुसांई।
धनि पिउ एकै संगि बसेरा। सेज एक पै मिलन दुहेरा।
धन्नि सुहागिनि जो पिय भावै। कहै कबीर फिरि जनमि न आवै।

३) माई री म्हा लियाँ गोविन्दाँ मोल।
थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे लियां बजन्ता ढोल।
थे कह्याँ मुंहोघो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लियारी तराजां तोल।
तण वाराँ म्हाँ जीवण वाराँ, वाराँ अमोलक मोल।

४) i) मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाई परैं स्यामु हरित दुति होइ ।।
ii) तंत्रीनाद, कवित्तरस, सरस राग, रति रंग।
अनबूडै बूडे तिरे, जे बूडे सब अंग।।